हेम चन्द्र जैन जी का निधन 14 सितम्बर 2007 को शाम साढ़े सात बजे हो गया। निधन के समय उनकी उम्र लगभग 75 वर्ष थी। अपनी ज़िंदगी के ये 75 साल उन्होंने वामपंथी राजनीतिक विचारधारा में अटूट विश्वास के साथ जिये। उनके जीवन की कहानी संगीत साहित्य और फिल्मों में उनके गहरे अध्ययन और शौक के रंगों में भरी है।

उनका जन्म शिकोहाबाद में हुआ था। पढ़ाई करने के लिए उन्हें अपने व्यापारी परिवार का काफ़ी विरोध झेलना पड़ा। दसवीं के तुरंत बाद टीचर ट्रेनिंग लेकर उन्होंने पहले शिकोहाबाद के एन.एन.जैन और फिर आगरा के एम.डी.जैन कॉलेज में अध्यापन का कार्य किया। दर्शन शास्त्र में स्नातक की उपाधि उन्होंने अपने प्रयासों से बाद में ली। सन् 1957 में वह एल.आई.सी. की नौकरी करने भोपाल चले गये। सन् 1961 में उनका आगरा तबादला हो गया, जहां वह अंतिम समय तक रहे। सन् 1951 में शादी के बाद से श्रीमती सरला जैन उनके जीवन और विचारों की संगिनी रहीं।

इन तारीख़ों का बयान उनके जीवन का पूरा विवरण नहीं कर सकता। बहुत छोटी उम्र से ही वामपंथी विचारधारा उनके जीवन का मार्गदर्शन करती रही। एल.आई.सी. में वह ट्रेड यूनियन के अग्रणी नेता रहे, और इसके चलते एक बार प्रबंधक वर्ग में अपनी पदोन्नति को भी ठुकरा दिया। आगरा कम्युनिस्ट पार्टी में काफी लंबे समय तक वह काउंसिल के सदस्य रहे। पार्टी में उनका वैचारिक योगदान अंत तक रहा। उनका व्यक्तिगत जीवन भी प्रगतिशील विचारों की राह पर ही चला। कर्मकांडों के वह सख्त ख़िलाफ़ थे। उन्होंने अपने सभी बच्चों की उत्साहपूर्वक अंतर्जातीय शादियां कीं।

राजनीति के अलावा आगरा के सांस्कृतिक जीवन में भी वह बहुत सक्रिय थे। देश विदेश की दुर्लभ फिल्मों का प्रदर्शन करनेवाली आगरा फिल्म सोसायटी की याद बहुत लोगों को है। इसकी स्थापना सतीश बहादुर जी के साथ हेम चन्द्र जी ने ही की थी। इसके अलावा त्रिवेणी कला संगम की स्थापना में भी उनका पूरा सहयोग था। जन नाट्य संघ और इस्कस आदि सभी संस्थाओं की सांस्कृतिक गतिविधियों में वह ज़ोर-शोर से भाग लेते थे।

आगरा के प्रसिद्ध अख़बार सैनिक में वह लंबे समय तक फिल्म समीक्षा लिखते रहे। पुरानी हिंदी फिल्मों में उनकी रुचि ज़िंदगी-भर बरकरार रही। पुरानी फिल्मी क़िताबों और पत्रिकाओं का उनका अद्वितीय संग्रह शोध-छात्रों के लिए बहुमूल्य स्रोत है।

शास्त्रीय संगीत और पुरानी फिल्मों के संगीत का शौक तो उन्हें हमेशा से था, इनका संग्रह भी उन्होंने 78 आर.पी.एम. के रिकार्ड्स के समय से शुरू कर दिया था। 78 आर.पी.एम., एल.पी. रिकार्ड्स का सफर पूरा करके वह आख़िरी दिनों में इंटरनेट के ज़रिये दुनिया-भर के संगीत प्रेमियों से जुड़ गये थे, जिन्होंने उनके संग्रह के मूल्य को समझ उन्हें भरपूर मान दिया। 30-40 के दशक की फिल्मों के संगीत और संबंधित क़िताबों का उनका शोध-संग्रह अप्रतिम है। हिंदी फिल्म संगीत के अलावा दुर्लभ रवीन्द्र संगीत का भी संग्रह उनके पास था।

देशी-विदेशी साहित्य में अपनी गहरी समझ और रुचि की वजह से वह सभी को अच्छा साहित्य पढ़ने के लिए प्रेरित करते थे। शतरंज का भी उन्हें बहुत शौक था, और बच्चों व नौजवानों को शतरंज खेलने की प्रेरणा देते थे। आगरा चेस एसोसिएशन की स्थापना में भी वह अग्रणी थे।

स्पष्ट विचार, अटूट विश्वास और बहस का प्रेम, इस सबने उनकी ज़िंदगी को बड़ा रुचिकर रखा। उनके अनुपम कला संग्रह, अध्ययन और विभिन्न विषयों की गहरी जानकारी के चलते मित्रों और शिष्यों का बड़ा समूह हमेशा उनके साथ रहा। परिवारवालों के साथ-साथ ये मित्र और शिष्य भी उन्हें हमेशा याद रखेंगे।